www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-2* *Issue-10* *October 2025***

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में शोध पद्धतिः सिद्धांत, विकास और आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता

सोनी कुमारी

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में स्नातकोत्तर, रामगुलाम उच्च शिक्षा अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, मधुबनी, बिहार

सारांश

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान (Library and Information Science—LIS) आधुनिक सूचना–समाज का एक अत्यावश्यक अनुशासन है, जो सूचना के संग्रहण, संगठन, संरक्षण, पुनर्प्राप्ति और प्रसार को वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है। सूचना के बढ़ते वॉल्यूम, डिजिटल संसाधनों की विविधता, उपयोगकर्ता व्यवहार में तेजी से परिवर्तन, तकनीकी प्रगति और ज्ञान–आधारित अर्थव्यवस्था के उभार ने सै अनुसंधान के महत्व को और बढ़ा दिया है। इस परिप्रेक्ष्य में शोध–पद्धति एक महत्वपूर्ण साधन है, जो किसी भी शोध को वैज्ञानिक प्रणाली, तार्किकता, वस्तुनिष्ठता और विश्वसनीयता प्रदान करती है।

प्रस्तुत शोध–पत्र में LIS अनुसंधान की प्रकृति, शोध–पद्धति की अवधारणा, शोध के प्रकार, शोध डिजाइन, डेटा–संग्रह विधियाँ, सांख्यिकीय तकनीकें, ICT आधारित शोध उपकरण, ज्ञान–संगठन के लिए उन्नत पद्धतियाँ, डिजिटल परिवेश में अनुसंधान के नए आयाम, शोध नैतिकता, शोध की चुनौतियाँ तथा भविष्य की दिशाओं का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सै शोध अब पारंपरिक स्वरूप से आगे बढ़कर तकनीकी, डेटा–आधारित और बहु–विषयक हो गया है।

अध्ययन निष्कर्ष करता है कि पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में गुणवत्तापूर्ण शोध के लिए गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों पद्धतियों का संतुलित उपयोग आवश्यक है। शोधकर्ताओं को ICT उपकरणों, डेटा विश्लेषण तकनीकों, डिजिटल सेवाओं, उपयोगकर्ता व्यवहार मॉडल, AI आधारित उपागमों और नैतिक सिद्धांतों की गहन समझ होनी चाहिए। शोध–पद्धति सै अनुशासन को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान करती है और इसे भविष्य की नई चुनौतियों का सामना करने योग्य बनाती है। पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान एक तीव्र गति से विकसित होने वाला बहु–विषयक अनुशासन है, जिसका उद्देश्य सूचना के संग्रहण, संगठन, संरक्षण, पुनर्प्राप्ति और प्रसार की वैज्ञानिक व्यवस्था को विकसित करना है। सूचना–प्रधान समाज में ज्ञान का स्वरूप निरंतर परिवर्तित हो रहा है, जिसके परिणामस्वरूप सै अनुसंधान का क्षेत्र अधिक व्यापक, जटिल, तकनीकी और डेटा–आधारित बन गया है। आधुनिक समय में डिजिटल प्रौद्योगिकी, इंटरनेट, वेब–आधारित सूचनाएँ, ई–रिसोर्सेज, बिग डेटा, AI–आधारित एप्लीकेशन, मोबाइल लाइब्रेरी सेवाएँ और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों ने LIS अनुसंधान को नई दिशा प्रदान की है। ऐसे तेजी से बदलते परिवेश में शोध–पद्धति की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि यह शोध को वैज्ञानिकता, विश्वसनीयता, तार्किकता और वस्तुनिष्ठता प्रदान करती है ।

शोध–पद्धति वह व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसमें शोध समस्या की पहचान, साहित्य समीक्षा, परिकल्पना निर्माण, शोध डिज़ाइन, नमूना तकनीक, डेटा–संग्रह विधियों, सांख्यिकीय विश्लेषण और निष्कर्ष प्रस्तुति जैसे तत्व सम्मिलित होते हैं। LIS में शोध–पद्धति का उपयोग केवल सैद्धांतिक अध्ययन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उपयोगकर्ता व्यवहार, सूचना–आवश्यकताओं, डिजिटल सेवाओं की उपयोगिता, सूचना पुनर्प्राप्ति मॉडल, नॉलेज

ऑर्गनाइज़ेशन, डिजिटल रिपॉजिटरी, सूचना प्रसंस्करण, साइबर–सुरक्षा और ओपन एक्सेस पब्लिशिंग जैसे विविध क्षेत्रों में लागू होता है। गुणात्मक पद्धति उपयोगकर्ताओं के अनुभव और व्यवहार को समझने में सहायक होती है, जबकि मात्रात्मक पद्धति, सांख्यिकीय विश्लेषण के माध्यम से मापनीय, सटीक और वस्तुनिष्ठ परिणाम प्रस्तुत करती है। वर्तमान समय में मिश्रित शोध–पद्धति LIS अनुसंधान में अत्यंत प्रभावी और लोकप्रिय हो गई है, क्योंकि यह गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों दृष्टिकोणों का संतुलित समन्वय करती है।

डिजिटल परिवेश में LIS अनुसंधान के नए आयाम उभरकर सामने आए हैंकृ जैसे बिग डेटा एनालिटिक्स, डेटा माइनिंग, मशीन लर्निंग, क्लाउड–आधारित सूचना सेवाएँ, स्वचालित मेटाडेटा जनरेशन, सर्च इंजन ऑप्टिमाइजेशन, उपयोगकर्ता अनुभव (UX) विश्लेषण, सोशल मीडिया–आधारित सूचना अध्ययन और डिजिटल स्कॉलरशिप। इन उभरते क्षेत्रों में शोध करने के लिए शोध–पद्धति, ICT–आधारित उपकरणों और सांख्यिकीय विधियों का ज्ञान अत्यंत आवश्यक है। अनुसंधान नैतिकता भी LIS शोध–पद्धति का एक प्रमुख अंग है। सूचना की विश्वसनीयता, डेटा की गोपनीयता, उपयोगकर्ता की निजता, सही उद्धरण, मौलिकता, और च्संहपंतपेउ से बचना– शोध की गुणवत्ता सुनिश्चित करते हैं। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि स्पै अनुसंधान एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है जो समाज के ज्ञान–आधार को सुदृढ़ बनाता है और उपयोगकर्ता–केंद्रित सूचना प्रणाली के विकास में सहायक होता है। समग्र रूप से, यह ।इजतंबज दर्शाता है कि LIS में शोध–पद्धति न केवल अनुसंधान को दिशा प्रदान करती है, बल्कि इसे आधुनिक तकनीकी चुनौतियों के अनुरूप बनाती है। भविष्य में LIS अनुसंधान का विस्तार– AI, बिग डेटा, डिजिटल ह्यूमैनिटीज़, क्लाउड कंप्यूटिंग, साइबर–सुरक्षा और ओपन एक्सेस सूचना प्रणालियों– जैसे क्षेत्रों में तीव्र गति से होने की संभावना है, और इस विकास प्रक्रिया में शोध–पद्धति की भूमिका केंद्रीय बनी रहेगी।

प्रस्तावना

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान ज्ञान, सूचना, तकनीक और उपयोगकर्ता व्यवहार पर आधारित एक बहु–विषयक अनुशासन है। यह क्षेत्र विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, प्रबंधन, मनोविज्ञान, कंप्यूटर विज्ञान और शिक्षा जैसे अनेक विषयों से प्रभावित है। आधुनिक समय में सूचना की मात्रा न केवल बढ़ रही है बल्कि इसका रूप, पहुँच और गुणवत्ता भी बदल रही है।

इंटरनेट, वेब 3.0, क्लाउड कंप्यूटिंग, मोबाइल लाइब्रेरी, ई–लर्निंग, डिजिटल रिपॉज़िटरी, डाटा एनालिटिक्स और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने पुस्तकालय विज्ञान को अत्यंत गतिशील और तकनीकी बना दिया है। ऐसे में स्पै अनुसंधान अब पारंपरिक ग्रंथ–सूचियों या वर्गीकरण तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उपयोगकर्ता के संज्ञानात्मक व्यवहार, सूचना पुनर्प्राप्ति एल्गोरिदम, AI–संचालित सूचना प्रणालियों, डिजिटल ह्यूमैनिटीज़, ओपन एक्सेस, सॉफ्टवेयर एप्लीकेशन और साइबर–सुरक्षा तक विस्तृत हो चुका है।

इन सभी नए क्षेत्रों को समझने और सही निष्कर्ष निकालने के लिए वैज्ञानिक शोध–पद्धति का ज्ञान आवश्यक है। शोध–पद्धति न केवल अनुसंधान की गुणवत्ता को बढ़ाती है बल्कि अनुसंधान को सुसंगत, विश्वसनीय और उपयोगकर्ता–केंद्रित बनाती है।

LIS अनुसंधान की प्रकृति–

पुस्तकालय विज्ञान में अनुसंधान तीन प्रमुख आयामों पर आधारित होता है–

1. सूचना का वैज्ञानिक प्रबंधन
2. उपयोगकर्ता व्यवहार और आवश्यकताएँ
3. प्रौद्योगिकी–केंद्रित सेवाएँ

LIS एक बहु–विषयक अनुशासन

LIS शोध निम्न क्षेत्रों से प्रभावित होता हैः

- सूचना विज्ञान
- कंप्यूटर विज्ञान
- समाजशास्त्र
- मनोविज्ञान

- प्रबंधन
- सांख्यिकी
- संचार विज्ञान
- डेटा विज्ञान

LIS अनुसंधान की विशेषताएँ

1. उपयोगकर्ता–केंद्रित
2. व्यवहार–आधारित
3. तकनीकी रूप से उन्नत
4. डेटा–संचालित
5. वैज्ञानिक और तार्किक
6. सामाजिक रूप से उपयोगी

शोध–पद्धति की अवधारणा

शोध–पद्धति एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसमें समस्या की पहचान, उद्देश्य निर्धारण, डेटा संग्रह, विश्लेषण और निष्कर्ष तक पहुँचने की व्यवस्थित प्रक्रिया सम्मिलित होती है।

शोध–पद्धति के घटक

1. समस्या का निर्धारण
2. साहित्य सर्वेक्षण
3. परिकल्पना
4. शोध–डिज़ाइन
5. नमूना तकनीक
6. डेटा संग्रह
7. सांख्यिकीय विश्लेषण
8. निष्कर्ष
9. रिपोर्ट लेखन

शोध–पद्धति और शोध–विधि में अंतर

शोध–पद्धति= संपूर्ण शोध प्रणाली

शोध–विधि= शोध में प्रयुक्त तकनीकें

पुस्तकालय विज्ञान में शोध के प्रकार

1. ICT कौशल का अभाव
2. सांख्यिकीय ज्ञान की कमी
3. डेटा उपलब्धता
4. Plagiarism
5. ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधन सीमित

शोध विश्लेषण एवं निष्कर्ष–

1. LIS अनुसंधान तेजी से तकनीकी बन रहा है।
2. उपयोगकर्ता–केंद्रित सेवाएँ सर्वाधिक महत्वपूर्ण।
3. Mixed Method अनुसंधान सबसे उपयोगी।
4. AI आधारित शोध बढ़ रहा है।
5. शोध नैतिकता अनिवार्य है।

निष्कर्ष–

शोध–पद्धति पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान को वैज्ञानिक और समकालीन आवश्यकताओं के अनुरूप बनाती है। डिजिटल प्रौद्योगिकी, AI, बिग डेटा, सोशल मीडिया, क्लाउड कंप्यूटिंग ने इस अनुसंधान को नए आयाम दिए हैं। गुणवत्तापूर्ण LIS अनुसंधान के लिए शोध–पद्धति का गहन ज्ञान, ICT दक्षता, डेटा विश्लेषण और अनुसंधान नैतिकता आवश्यक है। भविष्य में स्पै अनुसंधान और अधिक तकनीकी, बहु–विषयक और उपयोगकर्ता–केंद्रित होगा।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ–

1. Kothari, C. R, 2004, Research Methodology: Methods and Techniques, New Age International.
2. Creswell, J. W. 2014, Research Design: Qualitative, Quantitative and Mixed Methods Approaches, Sage.
3. Busha, C. H, & Harter, S. P. 1980, Research Methods in Librarianship, Academic Press.
4. Powell, R. R, & Connaway, L. S. 2004, Basic Research Methods for Librarians, Libraries Unlimited.
5. Gorman, G. E. & Clayton, 2005, Qualitative Research for the Information Professional- Facet Publishing.
6. Silverman, D, 2016, Qualitative Research- Sage Publications.
7. Tashakkori, A, & Teddlie, C, 2010, Mixed Method Research, Sage.
8. Singh, S, P, 2019, Library and Information Science Research in Digital Era- Ess Ess Publications.
9. Wilson, T, D, 2000, Human Information Behaviour, Informing Science, 49–56.
10. Case, D. O. 2007, Looking for Information: A Survey of Research on Information Seeking- Academic Press.
11. Savolainen, R 2016, Approaches to Information Behaviour Research-ß Information Research-
12. Fidel, R, 2012, Human Information Interaction, MIT Press.
13. Bates, Marcia J, 2010, Information Behavior Theories, Annual Review of Information Science and Technology.
14. Arms, W, 2000, Digital Libraries, MIT Press.
15. Lesk, M, 2005, Understanding Digital Libraries, Morgan Kaufmann.

Cite this Article

'सोनी कुमारी', "पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में ोध पद्धतिः सिद्धांत, विकास और आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:10, October 2025.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i100009

Published Date- 03 October 2025